



SHRI SUNDARAM VERMA

Shri Sundaram Verma is the originator of Dry land Agro Forestry, propagator of Agro bio diversity conservation, rain water harvesting and coordinator amongst progressive farmers to communicate their innovative techniques to HBN and NIF India . While adopting farming , he developed new techniques with his own experience by solving problems in collaborations with farmers and agricultural scientists.

2. Born on 1st December, 1950, Shri Verma received his Bachelor degree of Science from S.K. College Sikar, University of Rajasthan in 1972. After graduation, in spite of the offer of science teacher, he preferred farming. Based upon the family experience of agriculture and his educational background, he made efforts to solve the problems which are often experienced by farmers. While doing this, he also developed research activities, evaluated by agriculture and forest department, agriculture universities, ICAR Institutes and AFRI and used traditional practices in combination with latest techniques in the farming system.

3. Shri Verma has developed a new technique of planting trees in the semiarid plains of the desert in which the plant requires one litre of water through its life span. Shady Timber, medicinal fodder and some fruit plants can be planted by this technique. More than 80% survival rate of plants, about 50000 plants have been planted in collaboration with forest, water shed Department and CSR-ONGC. He has done an excellent work in the field of rain water harvesting by spreading plastic sheets in one hectare land in his pomegranate orchid in between the rows of plants by using his earlier idea submitted to NIF India, ICAR and NABARD. He collected 20 lakh litre water into newly built farm pond which is used for irrigation in more than one hectare. He created three year ideal crop cycle i.e. cereals first, followed by pulses + oils seeds and vegetables + spices + medicinal plants for reducing of diseases and pests and increasing income with sustainable farming.

4. Shri Verma is recipient of numerous national, international awards and honours, i.e. Award for innovative farmer by IFPRI (USA),Vardan & Isee India (2006). He has been awarded first Jagjivanram Kishan Puraskar by ICAR in 1997; Choudhary Charn Singh Krishak Shiromani Samman 2002; Plant Genom savior farmer Recognition 2007; Reward 2015 by PPV & FRA; Scout Prize by NIF India 2005 and 2013 and Krishk Smrat Samman by Mahindra & Mahindra 2011. He was also honoured with Gram swarajya Shodh Purskar 1995; Van Pandit Puraskar 1998; University Farmer Award 1998 by Govt. of Rajasthan, Dalmiya Pani Pryavaran Purskar 2007 and Haldhar Ratan Purskar 2010.

5. Shri Verma participated in 13 international and 28 national exhibitions and presented his achievements. He has participated as speaker in the opening session at FAO (ROMA) 2007; WIPO (Geneva), 1999; IDRC (Ottawa) and Montrial 2001; International Crops Science Congress, New Delhi, 1996. The techniques have been broadcast by Discovery Channel, Doordarshan and various reputed national electronic media. The international conference FAO Roma, ICSC, New Delhi Conference bulletin and national as well as international print media --- forest people tree SWEEDAN, Mk shift (USA), Kheti (ICAR), Unnat Krishi (DOA), Honey Bee, Farmer led participatory research, Kheton ke Vigyanic, Sarad Krishi etc. Times of India, Economics Times, Hindustan, Panjab Kesari, Pioneer, The Hindu, Patrika, Dainik Bhaskar, Navjyote, Rastradoot, Haldhar Times --- have given ample space to the techniques. He has been member of Rajasthan of different Research Advisory Committees including ex.- Member of Spice Board India, Cochin and member of Kishan Ayog, Govt. of Rajasthan.





श्री सुंडाराम वर्मा

श्री सुंडाराम वर्मा शुष्क भूमि कृषि वानिकी के जनक, कृषि जैवविविधता संरक्षण, वर्षा जल संचयन के प्रचारक तथा अपनी नवोन्वेषी तकनीकों को एचबीएन और एनआईएफ इंडिया को सूचित करने वाले प्रगतिशील किसानों के समन्वयक हैं। खेती अपनाते समय, उन्होंने किसानों और कृषि वैज्ञानिको के सहयोग से समस्याओं के समाधान के अपने अनुभव के द्वारा नई तकनीकें विकसित की।

2. 1 दिसंबर, 1950 को जन्मे, श्री वर्मा ने 1972 में राजस्थान विश्वविद्यालय के एस. के. कॉलेज, सीकर से विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। स्नातक बनने के बाद विज्ञान के अध्यापक की पेशकश को ठुकराकर उन्होंने खेती करना पसंद किया। कृषि के अपने पारिवारिक अनुभव और शैक्षिक पृष्ठभूमि के आधार पर उन्होंने किसानों के सम्मुख आने वाली समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया। ऐसा करते हुए, उन्होंने कृषि और वन विभाग, कृषि विश्वविद्यालयों, आईसीएआर संस्थानों और एएफआरआई द्वारा मूल्यांकित अनुसंधान गतिविधियों को भी विकसित किया तथा कृषि में नवीनतम तकनीकों के साथ पारंपरिक तरीकों का इस्तेमाल किया।

3. श्री वर्मा ने अर्द्धशुष्क रेगिस्तानी मैदानों में वृक्षारोपण की नई तकनीकें विकसित की हैं, जिनमें पौधे को अपने पूरे जीवन में केवल एक लीटर पानी की जरूरत होती है। इस तकनीक के द्वारा छायादार पेड़, औषधीय चारा और कुछ फलदार पौधे उगाए जा सकते हैं। इन पौधों के जीवित रहने की दर 80: से अधिक है और वन, जलाशय विभाग तथा सीएसआर–ओएनजीसी के सहयोग से लगभग 50,000 पौधे लगाए गए हैं। उन्होंने एनआईएफ इंडिया, आईसीएआर और नाबार्ड को प्रस्तुत अपने पूर्ववर्ती विचार का प्रयोग करके अपने अनार के बाग में पौधों की पंक्तियों के बीच 1 हेक्टेयर भूमि में प्लास्टिक की शीट फैला कर वर्षा जल संचयन के क्षेत्र में शानदार कार्य किया है। उन्होंने अपने नवनिर्मित कृषि तालाब में बीस लाख लीटर पानी इकट्ठा किया, जिसे एक हेक्टेयर से ज्यादा जमीन की सिंचाई के लिए प्रयोग किया जाता है। उन्होंने सतत कृषि के द्वारा कृषि रोगों और कीटनाशक में कमी करके तथा आय बढ़ाने के लिए आदर्श उपज चक्र तैयार किया, जिसमें पहले वर्ष में अनाज, दूसरे वर्ष में दालें व तिलहन तथा तीसरे वर्ष में सब्जियां, मसाले और औषधीय पौधे शामिल हैं।

4. श्री वर्मा को अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें आईएफपीआरआई (यूएसए), वरदन और ईसी इंडिया (2006) द्वारा नवोन्वेषी किसान पुरस्कार शामिल है। उन्हें 1997 में आईसीएआर द्वारा प्रथम जगजीवन राम किसान पुरस्कार; चौधरी चरण सिंह कृषक शिरोमणि सम्मान 2002; प्लांट जिनोम सेवियर फार्मर रिकग्निशन 2007; पीपीवी एंड एफआर द्वारा पुरस्कार 2015; एनआईएफ इंडिया द्वारा 2005 और 2013 का स्काउट प्राइज तथा महिंद्रा एंड महिंद्रा द्वारा कृषक सम्राट सम्मान 2011 प्रदान किया गया है। उन्हें ग्राम स्वराज्य शोध पुरस्कार 1995; वन पंडित पुरस्कार 1998; राजस्थान सरकार द्वारा यूनिवर्सिटी फार्मर अवार्ड 1998, डालमिया पानी पर्यावरण पुरस्कार 2007 तथा हलधर रतन पुरस्कार 2010 से भी सम्मानित किया गया।

5. श्री वर्मा ने 13 अंतरराष्ट्रीय और 28 राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लिया और अपनी उपलब्धियां प्रस्तुत कीं। उन्होंने एफएओ (रोमा) 2007; डब्ल्यूआईपीओ (जिनेवा) 1999; आइडीआरसी (ओटावा) तथा मोंट्रियल 2001; इंटरनेशनल क्रॉप्स साइंस कांग्रेस, नई दिल्ली, 1996 के प्रारंभिक सत्र में वक्ता के रूप में भाग लिया। उनकी तकनीकों का प्रसारण डिस्कवरी चैनल, दूरदर्शन तथा अनेक प्रतिष्ठित इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर किया गया है। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एफएओ रोमा, आईसीएससी, नई दिल्ली सम्मेलन बुलेटिन और राष्ट्रीय के साथ–साथ अंतरराष्ट्रीय प्रिंट मीडिया – फॉरेस्ट पीपल ट्री स्वीडन, एमके शिफ्ट (यूएसए), खेती (आईसीएआर), उन्नत कृषि (डीओए), हनी बी, किसान के नेतृत्व में भागीदारीपूर्ण अनुसंधान, खेतों के वैज्ञानिक, सारद कृषि आदि, टाइम्स ऑफ इंडिया, इकोनॉमिक्स टाइम्स, हिंदुस्तान, पंजाब केसरी, पायनियर, द हिंदू, पत्रिका, दैनिक भास्कर, नवज्योति, राष्ट्रदूत, हलधर टाइम्स ने उनकी तकनीकों को पर्याप्त स्थान दिया है। वह, स्पाइस बोर्ड इंडिया, कोचीन के पूर्व सदस्य और, राजस्थान सरकार के किसान आयोग के सदस्य सहित राजस्थान की विभिन्न अनुसंधान सलाहकार समितियों के सदस्य रहे हैं।